मधुबन ओम् शान्ति अंक 375 अक्टूबर 2023

पत्र-पुष्प

"सफलतामूर्त बनने के लिए व्यर्थ संकल्पों की रचना बंद कर सदा समर्थ बनो" (20-09-2023)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा सर्व खजानों की सम्पन्नता द्वारा सफलता का अनुभव करने वाले, फरिश्ता भव की वरदानी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश में परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा फहराने वाले सभी ब्राह्मण कुल भूषण बाबा के नूरे रत्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी हर कदम में बापदादा के साथ और हाथ का अनुभव करते, स्व की श्रेष्ठ स्थिति द्वारा विश्व कल्याण की सेवा में सदा तत्पर हो ही! बाबा कहते बच्चे, समय की तीव्रगति को देखते हुए अब अपने हर खजाने को सफल करो, हर खजाने के ट्रस्टी बनकर रहो। अलबेलापन ही खजानों को वेस्ट करता है इसलिए इससे मुक्त रह हर खजाने को सेवा में लगाओ। अब व्यर्थ संकल्पों की रचना बन्द करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने अपने सभी खजाने अन्तिम श्वांस तक सफल किये, कर्म सम्बन्ध निभाते कर्म बन्धनों से मुक्त रहे। देह में रहते सदा विदेही स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास किया, धन का एक एक पैसा सफल किया। मन को सदा एक की लगन में मगन रखा। तन की शक्तियों को, एक एक श्वांस को सेवा में सफल किया तब सफलता मूर्त बनें, ऐसे फालो फादर करो। सेवा करते उसमें जरा भी मेरेपन का भाव मिक्स न हो। कोई भी बात का फिकर न हो क्योंकि फिकर करने से समय भी व्यर्थ जाता, इनर्जी भी व्यर्थ जाती और जिस काम के लिए फिक्र करते वह काम भी बिगड़ जाता इसलिए एक बल एक भरोसे के आधार पर सदा निश्चिंत, बेफिक्र बनो। निश्चिंत स्थिति वाला ही जो कार्य करेगा उसमें सफल होगा। सिर्फ खजानों को जमा करने की विधि को अपनाओ, इन खजानों को श्रेष्ठ तरफ लगाना ही उन्हें जमा करना है, इससे व्यर्थ का खाता स्वत: ही परिवर्तन हो जाता है। कभी स्वप्न में भी गलती से प्रभु देन को अपना नहीं समझना। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है... यह मेरापन आया तो सब खजाने गंवा देंगे इसलिए नॉलेजफुल बनो और कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बन सभी खजाने सफल करते चलो। बोलो, बापदादा की ऐसी मधुर शिक्षायें सदा याद रहती हैं ना!

बाकी वर्तमान समय बाबा के बेहद घर में जो अनेकानेक प्रकार की सेवायें हो रही हैं, उनके समाचार तो साइंस के साधनों द्वारा आप सब सुनते, देखते ही होंगे। सेवाओं की तो बहार है, बाबा कहते बच्चे सेवा करते सिर्फ स्व-स्थिति का बैलेन्स रखना, याद और सेवा का बैलेन्स सहज ही मायाजीत बना देगा। समय प्रमाण अभी सभी सेवास्थानों पर योग का अच्छा वातावरण बना रहे, तो यह योग का किला ही अनेक विघ्नों से सेफ रखेगा। इसके लिए जितना हो सके सभी अन्तर्मुखी बन मन और मुख का मौन रख, एक बाबा की यादों में समाये रहो, बाबा का यही महामन्त्र सदा याद रहे कि हमें स्वयं को ही देखना है, स्व-चिंतन और प्रभु चिंतन करना है। कोई के भी हिसाब-किताब को देखते, संस्कार स्वभाव को देखते हलचल में आने के बजाए एक सेकण्ड में बिन्दी लगानी है। यह फुलस्टॉप लगाने और साक्षी हो हर एक के पार्ट को देखने का अभ्यास ही अन्तिम पेपर में पास विद ऑनर बनायेगा। अच्छा!

आप सभी तन और मन दोनों से सदा स्वस्थ होंगे। सभी खुशियों के झूले में झूलते, खुशी की खुराक खाते उड़ती कला में उड़ते चलो। सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

हर खजाने को सफल कर सफलतामूर्त बनो

1) समय प्रमाण अब हर खजाने को सफल कर सफलता प्राप्त करो। सफलता प्रत्यक्षता को स्वत: ही प्रत्यक्ष करेगी। वाचा की सेवा बहुत अच्छी की है लेकिन अब सफलता के वरदान द्वारा बाप की, स्वयं की प्रत्यक्षता को समीप लाओ। हर एक ब्राह्मणों की जीवन में सर्व खजानों की सम्पन्नता का आत्माओं को अनुभव हो।

2) किसी भी प्रकार का अलबेलापन खजानों को वेस्ट कर देता है, तो वेस्ट नहीं करना, एक से दस गुना बढ़ाना। जिसको बापदादा कहते कम खर्चा बाला नशीन। ये है बढ़ाना और वो है गँवाना। तो तन मन और धन को सदा सफल करने वाली ऑनेस्ट आत्मा बनो।

3) कोई भी समर्थ संकल्प आत्मिक शक्ति अर्थात् एनर्जी जमा करता है, समय भी सफल करता है। व्यर्थ संकल्प एनर्जी और समय को व्यर्थ गंवाता है इसलिए अब व्यर्थ संकल्प की रचना बन्द करो। यह रचना ही आत्मा रचता को परेशान करने वाली है इसलिए सदा इसी शान में रहो कि मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, समर्थ आत्मा हूँ तो कभी परेशान नहीं होंगे और अनेकों की परेशानी को मिटाने वाले बन जायेंगे।

4) अपने हर श्रेष्ठ संकल्प को सफल करने वा स्वयं को सम्पन्न बनाने के लिए ट्रस्टी बनकर रहो। ट्रस्टी बनना अर्थात् डबल लाइट फरिश्ता बनना। एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है।

5) जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमाकर कई कार्य सफल करते हैं। ऐसे ही संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई हो तो उससे औरों में भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। जो हिम्मतहीन हैं उन्हें हिम्मत देनी है, वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज्यादा कार्य करेगी, वर्तमान समय इसी की आवश्यकता है।

6) विजयीपन के निश्चय वा त्रिकालदर्शीपन के आधार पर जो भी कार्य करेंगे वह कभी व्यर्थ वा असफल नहीं होगा। सिर्फ वर्तमान समय को समझना, इसको सम्पूर्ण नहीं कहेंगे, यदि कोई भी कार्य में असफलता होती वा व्यर्थ हो जाता है तो इसका कारण तीनों कालों को सामने रखते हुए कार्य नहीं करते हो।

7) सदा सक्सेसफुल व सफलतामूर्त बनने के लिए अपनी स्टेज 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की बनाओ। अगर स्वयं सफलतामूर्त नहीं होंगे तो अनेक आत्माओं के संकल्प को सफल नहीं कर सकेंगे। जो सम्पन्न नहीं उसकी इच्छायें जरूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है।

8) ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्ण बनने के लिए अपने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किये, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा - सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। तो लक्ष्य रखो मुझे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है।

9) ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने? उनकी क्या विशेषता रही? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा? ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया। श्वांस-श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

10) साकार रूप में कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मबन्धनी आत्मा, कर्मातीत बनने का एक्जैम्पुल बने। तो फालो फादर करो।

11) जैसे यादगार के यज्ञ में आहुति सफल तब होती है जब मन्त्र जपते हैं। यहाँ भी सदा मन्मनाभव मन्त्र स्मृति में रहे तब आहुति सफल हो। तो मन्त्र स्वरूप में स्थित होने वाले बनो सिर्फ मंत्र बोलने वाले नहीं। कोई भी यज्ञ रचा जाता है तो वह सफल तब होता है जब सम्पूर्ण आहुति डाली जाती है। जरा भी आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। तो जो कुछ भी आहुति में देना है वह सम्पूर्ण देना है और फिर सम्पूर्ण लेना है।

12) कोई भी कार्य में सफलता प्राप्त करने का साधन है संगठित रूप में सबके शुभ संकल्प, उमंग-उत्साह के संकल्प। ऐसे संकल्प असफलता को मिटा देते हैं। जैसे किला कमजोर तब होता है जब कोई एक भी ईट हिलती है। यदि सब ईटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता। तो संगठन में सबका उमंग-उत्साह और श्रेष्ठ संकल्प हो, सहयोग हो तो सफलता हुई पड़ी है। यदि किसी भी कार्य में उमंग-उत्साह नहीं है तो थकावट होगी और थका हुआ कभी सफल नहीं हो सकता।

13) जैसे ब्रह्मा बाप ने निश्चय के आधार पर, रूहानी नशे के आधार पर निश्चित भावी के ज्ञाता बन सेकेण्ड में सब कुछ सफल

कर दिया; अपने लिए नहीं रखा, सफल किया, जिसका प्रत्यक्ष सबूत देखा कि अन्तिम दिन तक तन से पत्र-व्यवहार द्वारा सेवा की, मुख से महावाक्य उच्चारण किये। अन्तिम दिन भी समय, संकल्प, शरीर को सफल किया। तो सफल करने का अर्थ ही है - श्रेष्ठ तरफ लगाना। ऐसे जो सफल करते हैं उन्हें सफलता स्वत: प्राप्त होती है।

14) सफलता प्राप्त करने का विशेष आधार है–हर सेकेण्ड, हर श्वांस, हर खजाने को सफल करना। संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क जिसमें भी सफलता अनुभव करने चाहते हो तो स्व के प्रति चाहे अन्य आत्माओं के प्रति सफल करते जाओ। व्यर्थ न जाने दो तो ऑटोमेटिकली सफलता के खुशी की अनुभूति करते रहेंगे क्योंकि सफल करना अर्थात् वर्तमान के लिए सफलता मूर्त बनना और भविष्य के लिए जमा करना।

15) सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए समर्पण भाव और बेफिक्र स्थिति चाहिए। सेवा में जरा भी मेरेपन का भाव मिक्स न हो। कोई भी बात का फिक्र न हो क्योंकि फिक्र करने वाला समय भी गंवाता, इनर्जी भी व्यर्थ जाती और काम भी गंवा देता है। वह जिस काम के लिए फिक्र करता वह काम ही बिगड़ जाता है।

16) सदा सफलता मूर्त बनने का साधन है – एक बल एक भरोसा। निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता है और निश्चिंत स्थिति वाला जो भी कार्य करेगा उसमें सफल जरूर होगा। इसके लिए जमा करने की विधि को अपनाओ तो व्यर्थ का खाता स्वत: ही परिवर्तन हो सफल हो जायेगा। बाप द्वारा जो भी खजाने मिले हैं उनका दान करो, कभी भी स्वप्न में भी गलती से प्रभू देन को अपना नहीं समझना। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है – यह मेरापन आना अर्थात् खजानों को गंवाना।

17) अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे। ईश्वरीय संस्कारों को बुद्धि के लॉकर में नहीं रखो। कार्य में लगाओ, सफल करो। सफल करना माना बचाना या बढ़ाना। मंसा से सफल करो, वाणी से सफल करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से, कर्म से, अपने श्रेष्ठ संग से, अपने अति शक्तिशाली वृत्ति से सफल करो। सफल करना ही सफलता की चाबी है।

18) आपके पास समय और संकल्प रूपी जो श्रेष्ठ खजाने हैं, इन्हें ''कम खर्च बाला नशीन'' की विधि द्वारा सफल करो। संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। ऐसे ही वाणी और कर्म, कम खर्चा और सफलता ज्यादा हो तब ही कमाल गाई जायेगी।

19) सफलता प्राप्त करने का आधार है सत्यता। लेकिन सत्यता में सभ्यता समाई हुई हो। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन इसमें ही सफलता होती है। सफलता मूर्त बनने की सहज विधि है – सर्व की दुआयें। जिन बच्चों को बाप की दुआएं वा सर्व आत्माओं की दुआएं प्राप्त होती हैं उन्हें मेहनत का अनुभव नहीं होता। वह सदा सफल होते हैं।

20) बापदादा द्वारा जो हर बच्चे को दिव्य बुद्धि का वरदान मिला है उस वरदान को कार्य में लगाओ अर्थात् यूज़ करो। कोई भी चीज़ यूज करने से, कार्य में लगाने से बढ़ती भी है और उसको सुख की, खुशी की अनुभूति भी होती है। हर कार्य में दिव्यता है तो यह दिव्यता ही सफलता का आधार है।

21) आपके पास जो भी प्रापर्टी है, समय, संकल्प, श्वांस, तन-मन-धन सब सफल करो, व्यर्थ नहीं गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय मैं पन से न्यारे बन सफल करो तो जमा होता जायेगा। सफल करना अर्थात् पदमगुणा सफलता का अनुभव करना।

22) समय की समीपता के कारण नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे लेकिन कितने भी काले बादल आयें आप अपनी उड़ती कला की स्टेज पर स्थित रहना तो गहरे काले बादल भी बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हो जायेंगे। सिर्फ छोटा सा स्लोगन याद रखना कि ''सफल करके सफलता पानी है।''

23) जो भी आपके पास प्रापर्टी है - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सब मैं पन से न्यारे होकर सच्ची दिल से सफल करो, तो जमा होता जायेगा। हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो - हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहो और सदा खुशी में मन से नाचते रहो। सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहो। यही सफल करने की विधि है।

24) सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते चलो। जितना सेवा में हल्कापन होगा उतना सहज उड़ेंगे, उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना - यही सफलता का आधार है। किसी भी बात में स्वयं को कभी भी भारी नहीं बनाओ। सदा डबल लाइट रहने से संगमयुग के सुख के दिन रूहानी मौजों के दिन सफल होंगे। संगमयुग का एक-एक दिन वैल्युबुल है, महान है, कमाई करने का समय है, ऐसे कमाई के समय को सफल करते चलो।

25) मन में यह संकल्प उठना कि विजयी तो अन्त में बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे – यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है; यह सम्पूर्ण बनने में विघ्न डालता है। यही अलबेलापन सफलतामूर्त और समान-मूर्त बनने नहीं देता है इसलिए इन संकल्पों से मुक्त बन विघ्न विनाशक स्थिति बनाओ, इससे सर्व शक्तियाँ सफल हो जायेंगी।

26) जो अपनी सूक्ष्म शक्तियों को हैंडल कर सकता है, वह दूसरों को भी हैंडल कर सकता है। तो स्व के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर सर्व के लिए यथार्थ हैंडलिंग पावर बन जाती

है। चाहे अज्ञानी आत्माओं को सेवा द्वारा हैंडिल करो, चाहे ब्राह्मण-परिवार में स्नेह सम्पन्न, सन्तुष्टता सम्पन्न व्यवहार करो – दोनों में सफल हो जायेंगे।

27) अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा नहीं करो। जब नाम है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग क्यों करते हो। सदा अपना यह नाम याद रखो तो सेवा में स्वत: ही खुदाई जादू भर जायेगा और सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

28) ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की ऐसी पर्सनैलिटी धारण करो जो आपकी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल होता रहे। कुछ भी व्यर्थ न जाए। छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखना। अपवित्रता की बातों को सुनते हुए नहीं सुनना। देखते हुए नहीं देखना। जैसे जिन चीज़ों से आपका कनेक्शन नहीं है, उन्हें देखते हुए नहीं देखते हो। रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखते हो। साइड सीन समझ कर पार कर लेते हो, ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए नहीं देखो।

29) इस ब्राह्मण जीवन में जो समय को सफल करते हैं वह समय की सफलता के फलस्वरूप राज्य-भाग्य का फुल समय राज्य-अधिकारी बनते हैं। जो श्वांस सफल करते हैं, वह अनेक जन्म सदा स्वस्थ रहते हैं। कभी चलते-चलते श्वांस बन्द नहीं होगा, हार्ट फेल नहीं होगा।

30) सदा ज्ञान का खजाना सफल करते रहो तो भविष्य में ऐसे समझदार बन जायेंगे जो अनेक वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ेगी, स्वयं ही समझदार बन राज्य-भाग्य चलाते रहेंगे। सर्व शक्तियों का खजाना सफल करो अर्थात् श्रेष्ठ कार्य में लगाओ तो सर्व शक्ति सम्पन्न बन जायेंगे। आपके भविष्य राज्य में कोई शक्ति की कमी नहीं होगी। सर्व शक्तियां स्वत: ही अखण्ड, अटल, निर्विघ्न कार्य की सफलता का अनुभव कराती हैं।

31) संगमयुग पर जो सर्व गुणों का खजाना मिलता है उसे सफल करो तो सदा के लिए गुणमूर्त बन जायेंगे। देखो गुणवान आत्माओं का अभी लास्ट समय तक भी 'सर्व गुण सम्पन्न देवता' के रूप में गायन होता है। स्थूल धन का खजाना सफल करने से 21 जन्मों के लिए मालामाल बन जाते हैं। तो सफल करो और सफलता मूर्त बनो।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

"कर्मों की गुह्य गति को समझ स्वयं को स्वयं रियलाइज कर परिवर्तन करो"

(समर्पित भाई-बहनों के गुल्जार दादी जी का क्लास 11-03-08)

हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में पाण्डव भवन का महत्व सदा ही रहता है क्योंकि पाण्डव भवन ही है जहाँ बाप और दादा ने साकार तन में लास्ट घड़ी तक निवास किया। हम सब बच्चों को श्रेष्ठ कर्म करके सिखाया। इस पाण्डव भवन में ही चार धाम हैं। भक्तिमार्ग में चार धामों का चक्कर लगाना बहुत श्रेष्ठ मानते हैं, उसका बहुत महत्व रखते हैं। लेकिन हम अर्थ सहित उसके महत्व को जान करके यात्रा करते हैं। तो पाण्डव भवन बाबा की कर्मभूमि, सेवाभूमि है। बाबा ने क्रियेटर बनके जो रचना रची, वो भी यहाँ माउण्ट आबू के पाण्डव भवन से ही हुई। तो कितना महत्व है पाण्डव भवन की धरनी का, और सभी लोग जो भी यहाँ प्यार से आते हैं, नये पुराने वी.आई.पी. कोई भी हो, तो चार धामों का सैर करके जरुर जाते हैं। यही बड़े-ते-बड़ा तीर्थ है। बाबा के शान्ति-स्तम्भ में यही स्लोगन लिखा हुआ है, यह आबू सबसे महान तीर्थ स्थान है। तो जहाँ साकार में बापदादा रहे हैं, उसी भूमि पर रह करके आप सभी सेवा कर रहे हो। तो आप लोगों की स्थिति तो बहुत ऊंची होगी! क्योंकि हर स्थान का महत्व अपना है और कोई भी मधुबन कहेगा तो पहले पाण्डव भवन ही बुद्धि में आयेगा। यह तो सेवा की वृद्धि के कारण, आने-जाने की सुविधा के कारण बाबा शान्तिवन में भी आता है। लेकिन शुरूआत तो यहाँ से ही हुई। साकार तन में भी यहाँ ही रहे और अव्यक्त रूप से जो पालना दी, वो भी पाण्डव भवन से ही हुई। तो यह नशा है? निश्चय से नशा होता है तो जितना निश्चय होगा, उतना महत्व रहेगा और उतना ही नशा भी होगा। अगर निश्चय नहीं है तो फिर नशा भी नहीं चढ़ता है, टेम्प्रेरी भले आप

याद करो, कहते रहो हाँ मधुबन बहुत ऊंचा है। यह बाबा की चरित्र भूमि, कर्मभूमि है... ऐसे जितना समय कहते हो उतना समय खुशी में रहते हो। वो भी सोच जितना पॉवरफुल होगा, उसी अनुसार थोड़ी झलक खुशी की आयेगी, लेकिन अल्पकाल के लिए। यह तो सदा के लिए स्मृति की बात है।

तो जैसे पाण्डव भवन का महत्व है ऐसे अब हमारे जीवन का भी महत्व है! स्थान का महत्व तो है, लेकिन स्थान के साथ दूसरी बात होती है स्थिति। स्थिति अगर बहुत श्रेष्ठ है तो स्थान का महत्व होता है। तो हमको चेक करना है कि स्थान के महत्व के हिसाब से स्थिति भी इतनी महान है कि साधारण है? मैजारिटी सेवा के लिए ही सरेण्डर हुए हैं लेकिन सिर्फ कर्मकर्ता हो या कर्म करते हुए जो बाबा स्थिति की बात कहते हैं, वो है? क्योंकि कर्म के बिना तो कोई रह नहीं सकता है इसलिए बाबा तो कहते हैं जितना हो सके बिजी रहो क्योंकि मन सेकण्ड में यहाँ से अमेरिका तक बिना टिकट के पहुँच सकता है। जो भी स्थान आपने देखे होंगे, वहाँ अगर पहुँचने चाहो तो मन से वहाँ एक सेकेण्ड में पहुँच सकते हो। तो कर्मणा सेवा जितना रूचि से करेंगे, यज्ञ सेवा समझ करके करेंगे उतना पुण्य का खाता बनता रहेगा। सेवा तो हम सब करते हैं जो भी ड्यूटीज़ हैं, वो हर एक की अपनी-अपनी हैं लेकिन सिर्फ सेवा करते हैं या सेवा करते पुण्य जमा करते हैं? अगर कर्म करते हुए हमारे पुण्य का खाता जमा हो रहा है, तो उसकी निशानी तन मन में बहुत खुशी होगी और भरपूरता का नशा होगा। जैसे कोई साहूकार होता है, तो उनकी शक्ल चाल-चलन से समझ जाते हैं कि यह रॉयल घर का है। तो बाबा भी आजकल हमसे क्या चाहता है? बाबा कहते हैं जितना आगे चलेंगे, समय समीप आता जा रहा है और आता जायेगा। फिर आपको वाणी की सेवा करने का टाइम नहीं होगा। न सुनने वालों को टाइम होगा, न सुनाने वालों को, लेकिन अन्त में आपकी सेवा या तो चेहरे से, चलन से या तो मन की शक्ति यानि मन्सा शक्ति के आधार से होगी।

तो सकाश देने की जो शक्ति है वो पहले हमारे में भरी हुई हो तभी तो हम दूसरों को सकाश दे सकेंगे। तो अभी यह चेक करो कि इतनी शक्तियां हमारे पास जमा हैं, जो हम शक्तियों की सकाश दूसरों को दे सकें? तो यह चेकिंग करते हो? क्योंकि बाबा ने इतला दे दिया है कि समय समीप आ रहा है और आयेगा अचानक, यह बाबा ने स्पष्ट सूचना दे दी है। तो होना अचानक है क्योंकि नम्बरवार माला है, जिसमें एक नम्बर सब तो लेंगे नहीं। तो इतनी हमारी तैयारी है? अचानक कुछ भी हो जाये, मैं नष्टोमोहा हूँ? मित्र-सम्बन्धियों से तो मोह कम हो जाता है, लेकिन अपने देहभान का मोह जो है, वो मुश्किल ही कम होता है। तो बाबा ने कहा है अभी अपने चेहरे और चलन से दिखाई दे कि हाँ, यह कुछ विशेष आत्मा है। आपके चेहरे से ही पता पड़े कि यह कोई न्यारे हैं। तो हमारी स्थिति कर्म करते हुए, कर्म की गति को जान ले कि यह श्रेष्ठ कर्म हैं, साधारण कर्म हैं या उल्टे कर्म हैं? समझो, हमको यह स्मृति नहीं रहती है कि यह यज्ञ सेवा है, साधारण रीति से जो ड्यूटी है, वो बजा रहे हैं। तो हमारे कर्म का फल क्या मिलेगा? साधारण ही होगा ना। और यज्ञ सेवा है, यज्ञ सेवा का पुण्य कितना है, वो हमारा जमा होगा। तो कर्मों की गति को हमेशा सामने रखना चाहिए, मैं कर्म कर रहा हूँ लेकिन इस कर्म की सफलता क्या है? नहीं तो कर्म की गति ध्यान में न होने से कर्म वा सेवा तो कर रहे हैं लेकिन पुण्य नहीं जमा होता है क्योंकि कर्मकर्ता तो दुनिया में भी बहुत हैं। तो जो भी ऐसे काम होते हैं जो नहीं होने चाहिए, उस काम से आपको कभी भी सुख नहीं मिल सकता है। अगर कोई ऐसे श्रीमत के विपरीत कर्म करता है, तो उसको वरदान नहीं मिल सकता, श्राप मिलता है। भगवान का श्राप जिसके सिर पर आयेगा, तो उसको खुशी कैसे होगी, आगे कैसे बढ़ेगा! उसके जीवन का लक्ष्य पूरा कैसे होगा? तो हमको बहुत सावधानी रखनी चाहिए इसलिए कभी बेकायदे काम नहीं करना चाहिए क्योंकि उससे पुण्य जमा नहीं होगा। तो कोई भी कर्म ऐसा न हो, अगर कोई श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो श्रापित हो जाते हैं। अपनी विशेषता के, अपनी चार्ज व ड्यूटी के अभिमान के वश होने कारण भी अन्दर बाहर युद्ध चलती रहती है। हाथ, पाँव भी चला लेते हैं। फिर सोचते हैं कि हमारी सेफ्टी क्या है? हमारे पास कुछ पैसा होना चाहिए, उसके लिए फिर कोई भी प्रयत्न करते हैं। एक पैसा, एक पोजीशन यह दोनों ही विकर्म कराते हैं। पोजीशन माना रोब अपनी विशेषता का, ड्यूटी का, दिमाग का उससे गलतियाँ होती हैं इसलिए दुनिया में भी कॉमन कहावत है कि पहले सोचो। तो जिस समय हम कर्म करते हैं, उस समय सोचके करते हो तो वो श्रेष्ठ कर्म हो जाता है। अगर उस समय आपने सोचा नहीं, तो पीछे वो सोच पश्चाताप के रूप में बदल जाता है। जैसे मानो मुझे यह करना नहीं चाहिए, उस समय मैंने सोचा नहीं, कर लिया। तो मेरा मन करने के बाद पश्चाताप जरूर करता है, उसको हम दबा देते हैं क्योंकि उसमें माया की, बॉडी कान्सेस की थोड़ी प्रवेशता होती है। लेकिन बाबा ने कहा समय पर नहीं सोचा तो वो सोच बदलके पश्चाताप हो जाता है। सोच-समझके कर्म करो तो पश्चाताप नहीं करना पड़ेगा। नहीं तो भगवान के घर में आके भी पश्चाताप करना पड़ेगा, तो यह सज़ा बहुत कड़ी है। और समझदार, ज्ञानी, भगवान के डायरेक्ट बच्चे, उनको तो फीलिंग बहुत जल्दी आयेगी। जीवन की सारी गलतियाँ एक रोल के रूप में इकट्ठी होके सामने आयेंगी, तो कोई भी हो वो तो घबरायेगा ही। वह दृश्य बड़ा भयानक होता है, भयानक माना जो अन्दर का भय है, वह उसकी सूरत में आता

है। तो धर्मराज की सज़ायें माना कोई ऐसे गरम तवा आदि नहीं है लेकिन महसूसता इतनी होती है, जैसे एक घड़ी का, एक मास का क्या, एक वर्ष समान लगेगा इसलिए हमको अपने कर्मों के ऊपर बहुत अटेन्शन देना चाहिए। कर्मों की गति बड़ी गुह्य है। हम साधारण रीति से कर्म करने में लग जाते हैं, चलो, आज का दिन पूरा हुआ, ठीक हो गया। अच्छा, थोड़ा योग लगा लिया, मुरली सुन ली, ड्यूटी अपनी कर ली, दिन पूरा हुआ लेकिन कैसा मेरा दिन पूरा हुआ, क्या जमा किया? क्योंकि जमा की बैंक सिर्फ संगम पर खुलती है और कोई युग में ऐसा नहीं होता है। तो इतना कर्मों की गति के ऊपर अटेन्शन है या साधारण रीति से चलते हो? कमाया कितना? जमा कितना हुआ? क्योंकि अभी जमा किया हुआ ही फिर खायेंगे, तो अपने ऊपर इतना अटेन्शन रहता है कि अगर अभी जमा नहीं किया तो कभी नहीं हो सकता है। जितना जमा किया उतना ही मिलेगा, फिर कमा नहीं सकते हैं। कमाई अभी है, बाबा ने कहा है जमा की बैंक ही संगम पर खुलती है और कोई युग में खुलती ही नहीं है। बाबा ने कितनी वार्निंग दी है, तो इतना अटेन्शन हमारा अपने ऊपर है!

अगर हमारी चेकिंग अच्छी तरह से है, तो हमारी छोटी-सी गलती भी बड़ी दिखाई देती है और अटेन्शन कम है तो बड़ी गलती के लिए भी कहेंगे, यह तो होता ही है, चलता ही है, सम्पूर्ण थोड़ेही बने हैं, कोई भी नहीं बना है... इस प्रकार से हम माया को अपने पास बिठा देते हैं, पानी भी पिला देते हैं तो माया को भी आदत पड़ जाती है। क्यों, क्या, कैसे की चाय-पानी माया को पिलाते हो, इसलिए वो बैठ जाती है। तो बाबा वर्तमान समय बहुत अटेन्शन खिंचवा रहा है, अभी बाप का रूप है, टीचर का रूप है लेकिन जब सतगुरू का रूप बाबा प्रैक्टिकल में धारण करेगा तो यह सभी बातें हमको खाने लगेंगी। अभी तो थोड़ा बाप का रूप है, तो प्यार भी मिलता है लेकिन बाबा आफिशियली हिसाब-किताब तो लेगा ना। फिर उस समय कुछ करना चाहेंगे तो कुछ कर नहीं सकेंगे, इसलिए हमारी यही आप सबसे रिक्वेस्ट है कि अपने कर्मों की चेकिंग जरुर करो। अगर दूसरे करेंगे तो वह उल्टा सुल्टा भी कर देंगे। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मैं तो अपने मन को जानता हूँ और खुद के बिना और कोई भी नहीं जान सकते हैं। तो अभी अच्छी तरह से अपने आपको रियलाइज़ करो। हम सब मिल करके क्यों नहीं ऐसा वायुमण्डल बनायें जो बाबा हमको वरदान ही वरदान देवे। वाह बच्चे वाह! कहे। ऐसे बाबा वाह बच्चे! कहता है लेकिन कर्मों की गति में वाह बच्चे वाह! कहे। कर्म और योगी की स्टेज हर समय हो, तो कोई भी हमारे हाथ-पाँव से, दृष्टि से, मुख से ऐसे कर्म न हो जो मिक्स हों। तो पाण्डव भवन वाले बाबा को क्या जवाब देंगे? ऐसा कोई समाचार नहीं आवे, क्योंकि छिपता तो कुछ नहीं है और पहले तो अपना मन खाता है, वेस्ट थॉट चलते हैं, खुशी गुम हो जाती है। तो सभी कर्मों की गुह्यगति को पूर्ण जानने वाले हो ना। हम एक दो को उमंग उल्हास दे करके बाबा को कहें, बाबा आपने कहा और हमने किया, यह शब्द कितना अच्छा है। गे गे वाली भाषा नहीं करो। बाबा ने कहा हमने किया, यह भाषा हो। अरे, हम नहीं करेंगे तो कौन करेंगे? क्योंकि हमने बाबा की इतनी पालना ली है, इतनी सेवा की है, वो तो कोई विरला होगा जो लास्ट में आके आगे जायेगा। बाकी तो हम नहीं होंगे तो कौन होंगे, इसमें पक्के बनो। सरेण्डर माना अपना विवेक जो है वो श्रीमत के अण्डर हो। तो बाबा को ऐसी रिजल्ट देंगे ना। अगर कोई ऐसी कमाल करके दिखायेंगे तो बाबा सोने के पुष्पों की वर्षा करेगा। उस समय की खुशी ऐसी होती है जिसमें अतीन्द्रिय सुख मिलता है। तो अभी ऐसा अतीन्द्रिय सुख लो। बाबा को कहो हम ही हैं और हम ही होंगे, इतना तो नशा रखना है क्योंकि सरेण्डर की लिस्ट में हो। तो सरेण्डर का बहुत महत्व होता है। अच्छा।

दादी जानकी जी के अमृत वचन

"धैर्यता, सहनशीलता और सन्तुष्टता, यह तीन गुण आत्मा को महान बनाते हैं"

(2006)

बाबा प्रतिज्ञा करते हैं, बच्चे तुम याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश कर दूँगा। परन्तु कई हैं जो प्रतिज्ञा तो करते हैं लेकिन पालन नहीं करते हैं। बाहर लोग गुरु को देख प्रतिज्ञा करते हैं फिर पालन नहीं किया तो पश्चाताप होता है। वेस्ट आफ टाइम। हमारा बाबा कितना प्यारा, मीठा, भोला है। जितना वो भोला है, मीठा है उतना हम सब प्यार से दृढ़ संकल्प करें, बाबा! बस, करके दिखायेंगे, यह भी कहने की जरूरत नहीं है। बहुत सारे बच्चों को बाबा ने देख लिया। सुबह को कुछ और शाम को कुछ और। यहाँ बैठे तो झोली भर दी, बाहर गये तो खाली। परन्तु ज्ञान माना समझ, समझ माना सच्चा बनना। जिसको सच मिला वो झूठ को क्या करेंगे! प्रतिज्ञा नहीं करेंगे, सच मिला ना। मुट्ठी पकड़कर नहीं रखी है, पर मुट्ठी में मिला क्या? जो कोई भी बात को

पकड़के रखता है वो कुछ नहीं ले सकता है। देने वाला दे रहा है, लेने वाला ले नहीं सकता।

जो कोई बात भूल नहीं सकता, वह माफ भी नहीं कर सकता। माफ करने के लिए धैर्यता चाहिए। ताली दो हाथ से बजती है, अगर दूसरा कोई भूल करता है तो जरूर मैंने भी कुछ की होगी। परन्तु मुझे अभुल बनने का पुरुषार्थ करना है। भूल में भूल नहीं करो। कोई मर्यादा के अनुसार नहीं चला तो भूल हुई, पर मुझे मर्यादा में चलना है। न मैं रुकूं, न किसी को रोकूँ। भगवान जाने वो जाने, तुम बीच में क्यों आता है। भूलें औरों की, उसको हम याद करें और करायें तो चक्कर में मैं आ गयी ना। किसकी भी भूल को याद करना, यह बड़ी भूल है। बाबा नहीं याद रहेगा। इसमें पेशेन्स से अपने को सिखाना है। किसी ने भी कुछ किया, अरे तुम्हारा यह सीखने का टाइम है, तुम्हारी यह स्टूडेन्ट लाइफ है।

बाबा ने कहा तुम मुझे याद करो, तुम्हारे विकर्म विनाश कर दूँगा। अभी मेरे को कोई विकल्प भी न आये। व्यर्थ संकल्प भी न आयें। विकल्प तो विकर्म कराए बिना छोड़ेगा नहीं। मुझे विकर्माजीत बनना है, तो पावर आ गई। प्रतिज्ञा नहीं की, पर बनना ही है, कब बनना है? अभी बनना है तो बाबा मदद करेगा। और की हुई भूलें माफ कर देगा। अपने संकल्प की क्वालिटी को ऊंची बनाते जाओ। निश्चय के बल वाली बनाते जाओ। संकल्प में निश्चय का बल हो। कमी के साथ जिन्दा नहीं रहना है, कमियों को जीते जी खत्म करना है। सम्पन्न बनके मरना है।

तो पहले धीरज से अपने को सिखाओ, औरों के लिए भी धीरज रखो। उसके लिए सहनशीलता चाहिए। ऐसी सहनशक्ति हो, जैसे किसी ने थप्पड़ मारा, पर मुझे लगा ही नहीं, मेरा बाबा इतना रक्षक है, यह अनुभव है। बाबा से समय पर इशारा मिलता है तो सहनशीलता आटोमेटिक आती है। फिर सन्तुष्टता बढ़ती जाती है। तीनों गुणों से ही महान आत्मा बनते हैं। उसके चेहरे से लगेगा ही नहीं कि उसको कोई बात याद है। हमेशा कहेगा जो कुछ हुआ, उसमें भला है। किसी ने बुरा किया ही नहीं है। इससे तीन गुण आ गये, धैर्यता भी आई, सहनशक्ति भी आई, सन्तुष्टता भी आई। इन तीन गुणों से सबके साथ व्यवहार बड़ा अच्छा। सत्यता, नम्रता से व्यवहार अच्छा है। अभिमान विघ्न डालता है, हमको विघ्न-विनाशक बनना है। सत्यता की शक्ति और नम्रता का सहारा, जिससे सफलता मिलती है।

दु:खी होकर शरीर नहीं छोड़ना, इस शरीर में बैठे खुशी से आत्मा जाये। कभी शरीर से तंग होना माना सारी कमाई चट। शरीर भी निमित्त बनता है आत्माओं को बाबा के नजदीक लाने के। डाक्टर की जरूरत ही नहीं है। कोई भी कोने में बैठे हैं, शरीर में बैठे वायब्रेशन से सेवा कर रहे हैं।

बाबा की याद में रहना और याद दिलाना। जो याद में रहता है वो जहाँ भी रहता है, याद दिलाता है। अन्दर शान्त में रहता है। शान्ति से, धीरज, सहनशक्ति, फिर सन्तुष्टता भी आ गयी। तो शान्ति में प्राण तन से निकले। तो याद माना शान्त रहना। बोलना कुछ नहीं, बाबा भी नहीं कहना है, पर बाबा के साथ जा रहे हैं। शान्त रहते हैं तो यात्रा में साथियों को भी शान्ति मिलती है। हमारी यात्रा बुद्धि की है, बैठे हैं पर जा रहे हैं। बाबा खींच रहा है, हम चले वतन की ओर, खींच रहा है कोई, डाल के प्रेम की डोर। नाटक में पार्ट पूरा हुआ, बस। धर्मराज भी कुछ नहीं बोलेगा क्योंकि सत्य धर्म और राज्य स्थापन करने वाले हम हैं। भगवान बात करेगा किससे! बाप, टीचर, सतगुरु का पार्ट पूरा किया, अभी तुम जानो तुम्हारे कर्म जानें। मैंने पाला, पढ़ाया, सिखाया, तुम्हारे कारण तो यहाँ आया। बार-बार-बार कहा मेरे को याद करो, और किसी को याद नहीं करो। जिन्होंने जाना, माना उन्होंने पाया और भविष्य जमा किया। वो बाबा के नयनों के तारे हैं। तो सदा ही बाबा की दृष्टि में हैं। यह संस्कार अभी बनाना, भाग्य का काम है, यह पुरुषार्थ नहीं है। शिवबाबा भाग्य बनाने का भण्डारा भरपूर करता है तो काल कंटक दूर हो जाते हैं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''ब्राह्मण जीवन में आने वाले अनेक विघ्न तथा उनसे पार होने की युक्तियां''

1) अलौकिक और पारलौकिक बापदादा के, अलौकिक वा सर्वोत्तम जीवन बनाने वाले कुमार/कुमारियां, पहले हम आपसे पूछती कि अपने आपको सदा लौकिक दुनिया से न्यारे और पारलौकिक बाप के प्यारे, ऐसा अपने को सदा अनुभव करते हो? अलौकिक बाप के बच्चे हम दुनिया से निराले हैं। जैसे आज बाबा ने कहा कोई भी दुनिया के गुरु वा विद्वान ऐसे नहीं कह सकते कि आपस में तुम भाई-भाई या भाई-बहन हो। यह एक ही अलौकिक बापदादा हमें पाठ पढ़ाते - तुम भाई-भाई व भाई-बहन हो तो खुद को यह समझते हो कि दुनिया से हम अलौकिक हैं? खुद का नशा हमें क्या रहता? लौकिक हैं या अलौकिक हैं?

दुनिया से निराले हैं? जब हम निराले हैं तो दुनिया से कोई प्रीत है? आकर्षण है?

2) दुनिया में कोई भी बच्चा नहीं जो सोचे मैं बहुत बड़ी अथॉरिटी का बच्चा हूँ, हम तो वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं, हम बहुत बड़ी अथॉरिटी हैं। बाबा ने हमें बहुत बड़ी अथॉरिटी दी है, तो यह नशा रहता है कि हम वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं। कोई-कोई हमसे अनेक सवाल पूछते हैं, मैं आज उनका जवाब देती हूँ, कोई कहते हमारी जीवन में यह-यह विघ्न आते हैं। मैं कहती यह दुनिया है ही विघ्नों की। दुनिया माना ही कदम-कदम में विघ्न। जहाँ चलो वहाँ विघ्न ही विघ्न हैं। है ही कांटों का जंगल तो जहाँ चलेंगे वहाँ कांटा ही लगेगा। कोई कहते यह बड़े सहयोगी हैं, भल सहयोगी हैं लेकिन बाबा को नहीं जानते। तो वह सहयोग देते भी कई रूप से विघ्न रूप बनते हैं। चाहे कोई ज्ञान के खिलाफ बोलेगा, कोई कहेगा मैं तुम्हारे उद्देश्य को नहीं मानता। चाहे कोई कहेगा कि हम तुम्हारे भाई-बहन के नाते को नहीं मानते। चाहे कहे हम तुम्हारी नीति को नहीं मानते। न मानना ही माना हमारे लिए कोई न कोई विघ्न है। चाहे अपने मां-बाप हों, चाहे दोस्त हों, चाहे व्यवहार में कोई हो। सब विघ्न रूप बन जाते हैं। कहेंगे अगर तुम ज्ञान में चलोगे तो नौकरी नहीं देंगे। तो विघ्न अनेक हैं।

3) अगर मैं सोचती रहूँ विघ्न आया – मैं क्या करूं! कईयों के दिल में आता है कि क्या ज्ञान लिया और ही मुसीबत पाई। ज्ञान शान्ति के लिए लिया लेकिन और ही टक्करें खानी पड़ती, सांस ही नहीं लेने देते। अब इसका जवाब क्या है? मैं कहती विघ्न आना इस संसार का नियम है। विघ्नों को विनाश करना मुझ असंसारी का नियम है। संसार के नियम को खुद का नियम नहीं समझो। संसार की रीति है टक्कर देना, विघ्न डालना, ग्लानि करना, गाली देना, विरोध करना, वैरी बनना... लेकिन हमें संसार की रीति को, संसार के नियम को खुद का नियम नहीं समझना है। मैं तो असंसारी हूँ क्योंकि मैं अलौकिक की बच्ची हूँ, वह संसार से निराला है।

4) ब्राह्मण कुल में भी कोई-कोई एक दो के लिए विघ्न रूप बन पड़ते हैं। अगर आज मेरी कोई महिमा करते तो कल गाली भी दे सकते। आगे बढ़ता देखेंगे तो ईर्ष्या करेंगे, आगे नहीं बढ़ेगे तो ग्लानि करेंगे, यह तो है ही जैसे बुद्धू। हसूंगी तो कहेंगे चंचल है, चुप रहूँगी तो कहेंगे बुद्धू है। अगर सेन्टर पर काम करूंगी तो कहेंगे सारा दिन सेन्टर ही याद आता, घरबार कुछ नहीं। अगर नहीं करूंगी तो कहेंगे यज्ञ स्नेही थोड़ेही है। अगर अपना तन-मन-धन सफल करेंगे तो कहेंगे कुछ तो फ्यूचर का भी सोचना चाहिए। अगर नहीं करेंगे तो कहेंगे मनहूस है। अगर ज्ञान के नशे में सब कुछ भूले हुए होंगे तो कहेंगे इतना नशा थोड़ेही होना चाहिए। अगर नशा नहीं तो कहेंगे इसको तो बाबा पर निश्चय नहीं है।

5) दोनों तरफ मुश्किल ही मुश्किल है। सिन्धी में कहावत है.... चक्की का पुर नीचे का उठाओ तो भी भारी, ऊपर का उठाओ तो भी भारी। न उठाओ तो पीसूं। अगर सिम्पुल रहते तो कहेंगे यह संन्यासी बन गया। अगर ठीक-ठाक रहो तो कहेंगे इसे वैराग्य ही नहीं आया। आखिर क्या करूं! कभी बाबा भी मुरली में कहता क्या नौकरी टोकरी करनी है, अगर नहीं करते तो कोई पूछता नहीं। अगर सीरियस रहते तो कहेंगे यह तो बहुत सीरियस है, अगर हल्के होकर रहते तो कहेंगे मर्यादा सीखो। अगर बहन की मानता हूँ तो कहेंगे यह तो इनकी ही मानता है, अगर नहीं मानता तो कहेंगे यह तो मनमौजी है। यह मानने वाला थोड़ेही है। ऐसे अनेक प्रकार की बातें डेली दिनचर्या में आती। मैं उसमें क्या करूं! अगर इस बहन की सुनता तो दूसरी को एतराज होती, बड़ी की सुनता तो छोटी नाराज़ छोटी की सुनता तो बड़ी डाँटती। आखिर भी मैं क्या करूं! यह सभी के सवाल हैं – जो सदा से ही चले आते हैं।

6) जीवन भी एक नईया है, इसको चलाना होशियार मांझी (खिवैया) का काम है, इसके लिए पहली बात हमेशा समझो – जितना रुस्तम बनेंगे उतना रावण रुस्तम बनेगा। रावण क्या-क्या करता, आप उसकी सौ-सौ बातें लिखो। कभी कुदृष्टि लायेगा, कभी संस्कारों की टक्कर में लायेगा, कभी ईर्ष्या में, कभी मेरे पन में, कभी जोश में उसकी 100 बातें कम से कम हैं। लेकिन हमें उसे सेन्ट परसेन्ट जीतना है। अब यहाँ चाहिए हमारी बारीक बुद्धि। अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म बुद्धि। उसके लिए हमारे सामने है श्रीमत। जितने श्रीमत के बाबा इशारे देता, वह सब हमारे सामने क्लीयर आइने में होने चाहिए। उसी पर अपने को चलाओ। हमें बाबा कहता - तुम्हें पावन बनना है, माना सतोप्रधान बनना है। तो पहले अपने को देखो हम बिल्कुल ही तमो थे, हमें सतो में आना है। मैं सत्व गुण में कहाँ तक दृढ़ होती जा रही हूँ! अपनी सत-बुद्धि से, अपनी शीतलता की शक्ति से, सत श्रीमत से, बुद्धि साफ होने से, हम उनको राइट वे में सामना कर सकते हैं। अगर मेरी सत्व गुण की स्थिति नहीं है तो मेरी बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं। सत बुद्धि हो, श्रीमत के अनुकूल हो। आप वहाँ पर खड़े होकर फिर अपना जो कुछ विघ्न आवे उसके सत-असत की तुलना करके फिर जज करो। उस सत्व गुण में रहने से जो कभी बुद्धि में रजो तमो के अवगुण आते हैं, वह पहले पीछे हटें फिर जो स्वयं के संस्कार बहुत मेहनत कराते हैं, वह भी ठण्डे हो जायेंगे। पहले तो अपने को शीतल करो। शीतल बनने से आवेश, जोश के संस्कार शीतल हो जायेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।